अनुसूचित जनजाति जौनसारी बावर (एक स्तरीकृत समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ० गौतम बनर्जी
एसोसिऐट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
साहू जैन कॉजेज, नजीबाबाद (बिजनौर)

सारांश

जौनसार बावर क्षेत्र के सभी मूल निवासियों को जौनसार बावर अनुसूचित जनजाति के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। जौनसारी के सवर्ण समूहों को "खसिया" या "खासा" भी कहा गया है, यानि ब्राह्मण व राजपूत जौनसारी खासा कहे जाते हैं।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ० गौतम बनर्जी

''अनुसूचित जनजाति जौनसारी बावर''

शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 180–185
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 25

हिमालय परिसर में बसा जौनसार बावर उत्तर प्रदेश के देहरादून जिले के उत्तरी पश्चिमी का एक भूभाग है। यह क्षेत्र 77° 42" तथा 78° 5" देशान्तर एवं 30° 31" तथा 31° 2" उत्तरी अक्षांश के मध्य में स्थित है। इसकी सीमायें पूर्व में टिहरी गढ़वाल पश्चिम में हिमाचल प्रदेश का सिरमौर, उत्तर में उत्तरकाशी एवं दक्षिण में देहरादून तहसील है। जौनसार बावर की अधिकांश जनसंख्या चकराता तहसील के कलसी एवं चकराता भू–भाग पर निवास करती है, इस भूभाग को पहले जौनसार बावर परगना कहा जाता था।

1981की जनगणना के अनुसार जौनसार बावर जनजाति की कुल जनसंख्या 68348 है। यह परगना 39 खातों एवं 385 ग्रामों में विभक्त है। इस जिले के भूभाग का खेत्रफल 3088 वर्ग किमी है। यहाँ का अधिकांश भाग कठोर चट्टानों, पर्वत के शिखर एवं नदी घाटियों में स्थित है। समतल भूमि यदा कदा टुकड़ों में है। जलवायु के अन्तर्गत यह क्षेत्र समशीतोष्ण कटिबन्ध वाले भाग में आता है। यहाँ पर ग्रीष्मकालीन अवधि कम एवं शीतकालीन अवधि लम्बी होती है, यहाँ का अधिकतम तापमान 42.8° एवं न्यूनतम 1.7° सेल्सियस एवं वर्षा सामान्य 2142 मिमी एवं वास्तविक 1084 मिमी आंकी गई है। इस क्षेत्र की भूमि को चार श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है। सीानीय भाषा में इन्हें दोमट, मटियार, बलुई एवं ऊसर भूमि कहा जाता है।

जौनसार बावर जनजाति स्तरीकृत है। ये प्रमुख रूप से तीन सामाजिक स्तरों में विभक्त हैं, जो जन्म पर आधारित होने के कारण स्थिर हैं। इन तीनों पर संक्षिप्त टिप्पणी निम्न हैं–

उच्च स्तर

सर्वप्रथम ब्राह्मणों एवं राजपूतों का स्तर है जो कि परम्परागत भूमि के स्वामी के साथ–साथ कृषक एवं ऋण प्रदानकर्ता भी है। सामाजिक स्तर से ब्राह्मणों एवं राजपूतों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। सवर्ण वर्ग के प्रतिनिधित्व के कारण ये लोग आपस में विवाह सम्बन्ध भी स्थापित करते हैं। इनकी जनसंख्या अन्य दो स्तरों की अपेक्षाकृत अधिक है।

मध्य स्तर

सामाजिक स्तर के मध्य में दस्तकारों का प्रतिनिधित्व है। इसमें सुनार (स्वर्णकार), लोहार, काष्ठकार, नाथ (जोगड़ा) एवं बाजगी का स्थान आता है। ये सभी आपस में ऊँच–नीच का भेदभाव रखते हैं। अधिकांशतया लोग भूमिहीन है। ये सवर्णों का दासत्व स्वीकार किये हुए हैं। इनके निवास स्थान सवर्णों के निवास स्थान से सटे हुए या अत्यधिक निकट होते हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर शीघ्रता से बुलाया जा सके। इसमें काफी लोगों के निवास स्थान सवर्णों द्वारा प्रदत्त भूमि पर ही बने होते हैं। बाजगी के परिवार जौनसार ग्रामों के प्रत्येक ग्राम में निवास करते हैं। चूँकि ये विवाह एवं उत्सव में बाजा बजाने का कार्य करते हैं, इस कारण इन्हें 'बाजगी' कहा गया है।

निम्न स्तर

सामाजिक स्तरीकरण में सबसे निम्न स्तर का प्रतिनिधित्व डोम, मोची या चमार, करते हैं। इन्हें 'कोल्टा' कहा गया है। सबसे निम्न होम हैं। कोल्टा अछूत, परम्परागत भूमिहीन श्रमिक,

सवर्ण वर्ग अर्थात् प्रथम सामाजिक श्रेणी की दासता स्वीकार करने वाले वर्ग में आते हैं। कोल्टा जौनसार प्रत्येक गाँवों में निवास करते हैं। एक प्रकार से इनका पोषण समाज के उच्च स्तर के लोगों के द्वारा होता है। कतिपय परिवार वाले वर्तमान समय में शहरों में जीवन यापन करने लगे हैं। सामान्य गाँव सीमा के बाहर कोल्टा अपने निवास स्थानों का निर्माण करते हैं। अध्ययनों से कोल्टाओं में भी तीन स्तर मिलते हैं–

खण्डित मुण्डित– यह वर्ग सवर्णों (ब्राह्मण राजपूत) के परिवार से सम्बद्ध होता है। इसका सम्बन्ध एक पीढ़ी से न होकर 2–3 पीढ़ी पूर्व से होता है। यह अपने स्वामी की कृषि, गृह मरम्मत एवं हर प्रकार के कार्यों में सेवायें प्रदान करते हैं। एक प्रकार से यह स्वामी के परिवार के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। यदि स्वामी के परिवार में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाये तो वह सिर का मुण्डन (बाल कटवाना) करा लेते हैं। पारिवारिक खर्च के लिए भोज्य वस्तुएँ स्वामी के यहाँ से प्राप्त होती हैं।

2. मात– कोल्टा में सर्वाधिक संख्या मात श्रेणी की है। पूर्वज द्वारा लिया गया ऋण का भुगतान न करने की अवस्था में ऋणदाता के यहाँ मात कोल्टा को एक बन्धक के रूप में कार्य करना पड़ता है। ऋण का पूर्ण भुगतान न हो पाने पर इनके अग्रज पीढ़ी को यह दासता स्वीकार करनी पड़ती है। कुछ कोल्टा के परिवार ऐसे हैं जिन्हें यह पता नहीं कि उनके कौन से पूर्वज ने कितना ऋण किस शर्त पर लिया था।

3. संजयत– इनका सम्बन्ध सम्पूर्ण ग्राम या खेत से होता है। इन कोल्टाओं का कार्य जन्म–मृत्यु एवं विवाह जीवन सम्बन्धी संस्कारों की सूचना या निमंत्रण सगे सम्बन्धी एवं मित्रों तक पहुँचाना है।

आवास

जौनसारी के परम्परागत आवास काष्ठ, पत्थर, स्लेट के द्वारा निर्मित किये जाते हैं। मकान निर्माण में देवदार की लकड़ी या बल्ली का प्रयोग किया जाता है। आवास स्थान के दीवार पत्थर के आयताकार व दुमंजिले होते हैं, दीवार व खिड़की पर सुन्दर नक्काशी बनी होती है। आवास के नीचे के भाग में पशु व भंडार एवं ऊपर के भाग में सोने की व्यवस्था होती है। अस्थायी तौर पर कृषि कार्य को पूर्ण करने के लिए बनाये गये आवास को छानी कहते हैं। समय के बदलते परिवेश में इन लोगों ने पक्के मकानों का निर्माण करना शुरु कर दिया है। वन्य विभाग की कठोर व्यवस्था के कारण काष्ठ प्राप्ति में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, अतएव परम्परागत ढंग के मकान अब कम ही निर्मित हो रहे हैं।

परिधान

जौनसार बावर में गर्मी व जाड़े के परिधान अलग–अलग हैं। ये लोग सर्दी में ऊनी पैजामा (झगोल), जोगा, साफा एवं ऊनी जूते पहनते हैं। गर्मी में सूती कुर्ता, झगोल, डिगवा (टोपी) एवं बरसात में पत्तों की बरसाती पहनते हैं। स्त्रियाँ सर्दी में ऊनी कुर्ता, घाघरा ऊनी, घाटू एवं ग्रीष्म में घाघरा (सूती), कुर्ती, कमीज जिसे 'झगा' कहते हैं पहनती हैं।

सामाजिक संगठन

जौनसार बावर के परिवार पितृत सत्तात्मक, पितृवंशीय एवं पितृ स्थानीय है। जौनसार बावर में सामान्यतः विस्तृत परिवार पाये जाते हैं। क्षेत्र से बाहर जाकर किसी व्यवसाय या नौकरी में लगे हुए परिवार में सभी भाई व उनके सभी बच्चे रहते हैं। परिवार का मुखिया सबसे बड़ा पुरुष उसदस्य होता है। यह व्यक्ति परिवार की सम्पत्ति की देखभाल करता है, परन्तु सम्पत्ति पर सभी भाईयों का समान अधिकार होता है। महत्वपूर्ण कार्यों का निर्णय मुखिया के द्वारा ही लिये जाते हैं।

जौनसारी स्त्रियाँ कृषि कार्य में योगदान देते हुए गृहस्थ जीवन में भी कठोर श्रम करती है। स्त्रियाँ खेतों में हल नहीं चलाती हैं, परिवार में कार्य विभाजन आयु तथा लिंग के आधार पर होता है। बच्चे आयु के अनुसार कार्य करते हैं। स्त्री की प्रस्थिति ससुराल में परिहारात्मक होती है। वह परिवार के अतिरिक्त अन्य पुरुष से कोई सम्पर्क नरहीं कर सकती है।

बहुपति विवाह का प्रचलन

जौनसार बावर जनजाति अपने विवाह के प्रकार के कारण विशेष चर्चित रहे हैं। जौनसारी अपने समाज को पाण्डव वंश से जोड़ते हैं एवं अपनी विवाह परम्परा को पाण्डव द्वारा द्रौपदी से सम्पन्न विवाह से सम्बद्ध करते हैं और इसका ही अनुसरण अपने जीवन में करते हैं। जौनसारियों में भ्रात, बहुपति विवाह प्रचलित है। सामाजिक विधान के अनुसार– "किसी भी अनुज को अपने लिये पथ्थक या अतिरिक्त पत्नी से विवाह की आज्ञा नहीं है।" अतः केवल भाईयों में अग्रज ही विवाह करता है और उसकी पत्नी या समस्त पत्नियाँ अनुज की वैधानिक पत्नियाँ होती है। यदि अग्रज के विवाह के समय सबसे छोटा अनुज बच्चा है या उसका जन्म अग्रज के विवाह के पश्चात् हुआ है तो सबसे छोटे अनुज की युवावस्था आने पर अग्रज को, छोटे अनुज की हम उम्रं की लड़की से विवावह करना होगा। यह लड़की अग्रज की पहली पत्नी की बहन भी हो सकती है, यद्यपि सबसे छोटा अनुज बड़े अग्रज की पत्नी का भी पति होगा। इस प्रकार के विवाह को प्रोफेसर डी.एन. मजूमदार ने "बहुपत्नी विवाह" कहा है।

बहुपत्नी विवाह और बहुपति विवाह के कारण परिवार का संतुलन स्थायी एवं दृढ़ रहता है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति तथा कृषि योग्य भूमि की कमी, परिवार की सीमित आय, कठोर जीवन यापन में एकाकी परिवार का पालन–पोषण करना कठिन हो जाता है। इस तरह बहुपत्नी विवाह के कारण सभी भाई मिलकर सुविधापूर्वक निर्वाह करते हैं। इस प्रथा से सभी पत्नियों व पतियों में प्रेम रहता है। परिवार के बच्चे सभी के बच्चे होते हैं। अतः परिवार में वैमनस्य कम पाया जाता है और परिवार का विभाजन शीघ्रता से नहीं होता है। जौनसार में पहले वधू मूल्य वस्तु या पशुधन के रूप में होता था, परन्तु वर्तमान समय में यह मूल्य नकद धनराशि में होने लगा है। वधु मूल्य वस्तु या पशुधन के रूप में होता था, परन्तु वर्तमान समय में यह मूल्य नकद धनराशि में होने लगा है। वधु मूल्य न प्राप्त होने की स्थिति में वर पक्ष वालों को वधु पक्ष के माता–पिता या संरक्षक को वधु से उत्पन्न प्रथम संतान को वधु मूल्य के रूप में चुकाना पड़ता है।

जौनसारी समाज में विवाह विच्छेद की स्थिति कम पायी जाती है। ये लोग तलाक को "छूट" कहते हैं। तलाक निम्न कारणों से हो सकता है– ससुराल में पर पुरुष से समागम करना, बाँझपन होना एव गृहस्थ व कृषि कार्य में परिश्रम न करना, ऐसी अवस्था में पुरुष अपनी स्त्री को मायके भेज देता है और वापस नहीं बुलाता है। स्त्री इसका कारण समझ लेती है या स्त्री स्वयं पति का घर छोड़ देती है। तलाक अवस्था में पुरुष अपनी स्त्री को क्षतिपूर्ति देता है। क्षतिपूर्ति के सम्बन्ध में छूट की वार्ता की जाती है, यह क्षतिपूर्ति स्त्री के नये पति या माता–पिता अथवा संरक्षक को देना होता है। संतानविहीन स्त्री को समाज में निम्न दृष्टि से देखा जाता है।

सम्पूर्ण ग्राम में भाईचारा का संबंध माना जाता है। एक ग्राम के सभी लोग रिश्तेदार होते हैं। अतः आपस में विवाह नहीं करते हैं। प्रत्येक गोत्र (आल) के व्यक्ति आपस में रक्त संबंधी होते हैं। एक ही आल के व्यक्ति आपस में विवाह नहीं करते हैं। परिवार में सभी बच्चों को बाबा कहा जाता है। विवाहित स्त्री ससुराल में रैन्तुणी कहलाती है, मायके में वह ध्यान्टणी कहलाती है। ध्ययान्टणी में वह पर–पुरुष से यौन सम्पर्क कर सकती है। जौनसारी समाज में साली–जीजा में मजाक (परिहास) होता है, किन्तु साले की पत्नी व नन्दोई के बीच मजाक का रिश्ता (परिहार) नहीं होता है।

सामाजिक संगठन

जौनसार बावर का क्षेत्र 39 खतों में बंटा है। खतों के मुखिया को 'खत स्याना' और ग्राम के मुखिया को 'ग्राम स्याना' कहते हैं। उत्तर प्रदेश के पंचायतराज अधिनियम 1948 के अनुसार ग्राम सभाओं एवं पंचायती अदालतों का गठन किया गया, तथापि जौनसारियों के मध्य इनकी परम्परागत 'खुमड़ी' कार्यरत है। यह 'खुमड़ी' इनकी जातीय पंचायत है, इसमें छोटे–छोटे झगे़ व क्षतिपूर्ति के दावों का निर्णय होता है। इसमें स्त्रियाँ भाग नहीं ले सकती और न ही पंचायत की आम सभा में हिस्सा ले सकती हैं। परम्परागत स्याना को लोग वर्तमान समय में कम महत्व देने लगे हैं।

आर्थिक संगठन

जौनसारी अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि पर आधारित है। स्त्री–पुरुष दोनों ही लोग कृषि कार्य में बराबर का श्रम करते हैं। इनकी कृषि पशुशक्ति पर आधारित होती है। कृषि फसल में गेहूँ, धान, मक्का, अदरक, चौलाई एवं हल्दी का उत्पादन करते हैं, ये लोग जो अनाज का उत्पादन करते हैं, उसका अधिकांश भाग भंडार कर लेते हैं। जौनसारी लोग पर्याप्त मात्रा में पशुधन रखते हैं, जिसमें भेड़, गाय, भैंस व बकरी इत्यादि हैं।

धर्म एवं पर्व

ये लोग स्वयं को हिन्दू व पाण्डव का वंशज मानते हैं। धार्मिर्तक कृत्यों में परिवार की स्त्रियाँ व पुरुष दोनों ही लोग मिलकर भाग लेते हैं। मेले व उत्सव में साथ मिलकर नाचते गाते हैं, परन्तु मन्दिर के अन्दर कोल्टा, दस्तकारों की स्त्रियाँ प्रवेश नहीं कर सकती हैं। जौनसारी 'महाशु' को अपना देवता मानते हैं व पाण्डवों में भीम की पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त बोधा, चालदा, बीजर, आवासी, सिलगुरु, काली माँ, दुर्गा माँ की पूजा करते हैं। कोल्टा लोग नरसिंह

भगवान के नाम बकरे की बलि चढ़ाते हैं। जादू–टोना में बहुत विश्वास करते हैं। जादू–टोना करने वाले को 'बाकी' कहते हैं। मुख्य पर्व बिस्सु जो बैसाख माह में होता है एवं जागरा श्रावण माह में एवं दीपावली मनाते हैं। ये लोग दीपावली सामान्य दीपावली से एक माह बाद मनाते हैं, इसे 'हलियत' कहा जाता है। इसमें 5–6 स्त्री–पुरुष मिलकर एक साथ नृथ्य करते हैं।

वर्तमान समस्याएँ एवं सामाजिक परिवर्तन

प्रत्येक समाज, स्थान एवं जनजातियों में समस्याएँ एवं सामाजिक परिनवर्तन होना स्वाभाविक है। अतः जौनसार बावर भी इससे अछूता नहीं बचा है। मध्यक्रम के स्तर में आने वाले बाजगी परिवार आर्थिक आवश्यकता पूर्ण न होने पर, और समाज में वाद्य यंत्रों को स्थान मिलने से इनके कुछ एक परिवार दर्जी, नाई आदि का कार्य करने लगे हैं। संयुक्त परिवार वाली परम्परा के मध्य बाह्य सम्पर्क के कारण व अधिक शिक्षित व्यक्ति में एकाकी परिवार का प्रचलन प्रारम्भ हो चुका है। कठिन श्रम के कारण एवं भूमि की कमी के कारण कोल्टा स्त्रियों में वैश्यावृत्ति की प्रवृत्ति का प्रवेश हो चुका है। सामाजिक मानक के कारण, एक पति अपनी पत्नी से वेश्यावृत्ति करवा सकता है। इसमें कोल्टाओं एवं दस्तकारों की स्त्रियों की दशा अत्यधिएक दयनीय है जो कि तीर्थयात्री या पर्यटकों के सम्पर्क में आ जाती है। वन्य विभाग एवं खदान विभाग के गठन के कारण वन से काष्ठ, जड़ी–बूटी व पशु के लिए चारा एवं भवन के लिए पत्थर प्राप्त करने में भी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। 1981 की जनगणना के अनुसार इनमें शिक्षा का प्रतिशत 19 है। महिला शिक्षा प्रतिशतता केवल 6.43 है। पिछले तीन दशकों में जौनसारी क्षेत्र में विकासात्मक कार्यक्रमों के कारण इनकी सामाजिक, आर्थिक दशाओं में विकास हुआ है।

संदर्भ

1. Jain, S.C. (1948). "Some Features of Fraterenal Polyandry in Jaunsar Bawar", Eastern Anthropologist, 1(4): pp. **27-33.**
2. Majumdar, D.N. (1962). Himalayan, Polyandry : Structure, Functioning and Culture Change-A Field Study of Jaunsar Bawar (Calcutta, Asia Publishing House).
3. Negi, R.S., Srivastava, A.C. and Bhatnagar, B. R. (1972). "Distribution of ABO Blood Groups in Central and Western Himalayan populations", Bulletin of the Anthropological Survey of India 21 (3&4): pp. **57-76.**
4. Saxena, R.N. (1954). Social Economy of a Polyandrous People (Bombay : Asia Publishing House).
5. Srivastava, A.c. (1967). "Somatological Study of the Jaunsaris", Bulletin of the Anthropological Survey of India 16 (1&2): pp. **57-70.**